Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
D.B. College Jaynagar
Dept. of Psychology

Study material
B.A. Part-1
Paper- 1st
Date:- 01-12-2020
Lecture No.- 01802

Thinking & Problem Solving

Role of Imagery

बिम्ब एवं चिन्तन (Image and Thinking):- "बिम्ब किसी उद्दीपन की अनुपस्थिति में उसके संवेदी अनुभव का मानसिक चित्र है"। किसी संवेदी अनुभव का सचित्र अनुस्मरण ही बिम्ब है। स्वप्न भी चिन्तन का एक रूप है जिसमें बिम्बों का बाहुल्य रहता है। बिम्ब सभी प्रकार के संवेदी अनुभवों का होता है, यद्यपि दृष्टि-बिम्बों की प्रधानता रहती है। बिम्ब मध्यस्थ इकाइयों के रूप में चिन्तन को प्रभावित करता है, अर्थात समस्या और प्रतिक्रिया के बीच सम्बन्ध जोड़ने में सहायक होता है। बिम्बों के हेड़फेड़ से जटिल चिन्तन क्रियाएं भी संपन्न होती है। गणितज्ञ ज्यामितिक बिम्बों की सहायता से सोचता है और संगीतज्ञ ध्वनि बिम्बों की सहायता से। बीथोवेन (Beethoven) के संबन्ध में प्रसिद्ध है कि उनकी सर्वश्रेष्ठ संगीत-रचनाएं, बहरे होने के बाद, केवल ध्वनि-बिम्बों की सहायता से हुई। वुण्ट अपने संवेदनवाद (sensationism) में सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में संवेदी तत्वों की उपस्थिति सिद्ध करना चाहते थे। चिन्तन भी उनके अनुसार संवेदनजन्य है क्योंकि चिन्तन में बिम्ब अवश्य रहते हैं और बिम्ब संवेदी अनुभवों से उत्पन्न होता है।

यूनानी दार्शनिकों ने बिम्ब और विचार (Ideas) को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया। बिम्ब के संबंध में प्लेटो (Plato) का विचार है।

Scanned with CamScanner

प्लेटो के अनुसार, बिम्ब मूलवस्तु का यथातथ्य रूप रहता है, केवल उसका आकार छोटा होता है। क्योंकि वह मस्तिष्क जैसी छोटी जगह में रहता है। यह विचार अत्यधिक दोषपूर्ण है और इस शरीर क्रिया के संबंध में अज्ञता प्रदर्शित होती है। अवगम के समान बिम्ब भी स्नायु-तन्तुओं में विशेष प्रकार के क्रिया-प्रतिरूप (action-pattern) ~~समान बिम्ब भी स्नायु-तन्तुओं में विशेष प्रकार~~ की देन है। बिम्ब मौलिक वस्तुओं की यथातथ्य छाप नहीं होता है। गम्भीरता से विचार करने पर पता चलता है कि बिम्बों में प्रत्यक्ष वस्तु से स्पष्टता कम होती है, इसमें विवरण (Details) का अभाव होता है और अपेक्षाकृत ये अस्थायी भी होते हैं। बिम्बों का अध्ययन अन्तर्निरीक्षण विधि द्वारा होता है। कोई संवेदी अनुभव देकर उस उद्दीपन के मानसिक अनुभवों का अवशेषों का वर्णन करने को कहा जाता है। वर्णन वस्तु का नहीं, बल्कि वस्तु-अवशेष अथवा बिम्ब के गुणों का होना चाहिए अन्यथा टिचेनर (Titchener) के शब्दों में, उद्दीपन-दोष (Stimulus-error) होगा जिसमें व्यक्ति उद्दीपन से ~~संबंधित~~ उत्पन्न संवेदी तत्वों का वर्णन नहीं कर वस्तु का वर्णन करने लगता है।

बिम्बों के अनुभव में वैयक्तिक भिन्नताएं होती हैं। कुछ लोग बिम्ब के धनी होते हैं तो कुछ लोगों में इसका अभाव रहता है। कुछ लोगों के बिम्ब दूसरों से अधिक स्पष्ट होता है। विभिन्न व्यक्तियों में निश्चित संवेदी रूप के बिम्ब अधिक प्रधान होते हैं। बिम्बों की प्रधानता मापी जा सकती है। प्रयोज्यों के समक्ष विभिन्न संवेदन क्षेत्रों में शब्द एक एक कर उच्चारित किए जाते हैं और प्रयोज्यों को आदेश होता है कि प्रत्येक शब्द के बिम्ब का अनुभव करें तथा उसकी स्पष्टता के अनुसार उसे 'अति स्पष्ट', 'स्पष्ट', "साधारण", "अस्पष्ट" तथा 'अति अस्पष्ट' में से किसी एक पर रखें। बिम्ब प्रधानता के आधार पर सर्वप्रथम गाल्टन (Galton)

Scanned with CamScanner

ने लोगों को दृष्टि प्रकार (visile type), श्रवण-प्रकार (audile-type), स्पर्श प्रकार (tactile type), गन्ध प्रकार (olfactile type) तथा स्वाद प्रकार (gustatile type) नामक पाँच वर्गों अथवा बिम्ब-प्रकारों (imagery-type) में बाँटा है। इस जाँच के आधार पर सभी प्रकार के बिम्बों के अंक दिये जा सकते हैं और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसका क्रम निश्चित किया जा सकता है जो लगभग स्थायी स्वरूप का होता है। 'प्रकार सिद्धान्त' के लिए आवश्यक है कि जो व्यक्ति एक प्रकार में सबसे ऊँचा पाया गया और अन्य 'प्रकारों' में नीचा है, परन्तु अध्ययनों से पता चला है कि जिन व्यक्तियों को एक प्रकार के बिम्ब अधिक होते हैं उन्हें सामान्यतः दूसरे प्रकार के बिम्बों का अनुभव भी अधिक होता है।

अतः "बिम्ब-प्रकार-सिद्धान्त" सही प्रतीत नहीं होता है।

किसी व्यक्ति का बिम्ब प्रकार निर्धारित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग हुआ है। i) एक विधि के अनुसार प्रयोज्य को एक सीमित समय में विशेष प्रकार के रंग वाली अधिकाधिक वस्तुओं का नाम लेने को कहा जाता है अथवा विशेष ध्वनि देनेवाली वस्तुओं, विशेष स्वाद, गन्ध, स्पर्श आदि का अनुभव देनेवाली वस्तुओं का नाम गिनाने को कहा जाता है। विश्वास किया जाता है कि निश्चित समय में जो व्यक्ति जिस वर्ग की वस्तुओं के नाम अधिक बताता है उसमें उन बिम्बों की प्रधानता है। इस विधि को साहचर्य विधि (association method) कहते हैं। ii) एक दूसरी विधि के अनुसार प्रयोज्य को एक ही विषय को पहले दिखलाकर और फिर सुनाकर सिखाया जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को जिस संवेदी माध्यम से विषय मिलने पर अधिगम विधु होता है उसमें उस संवेदी रूप में बिम्ब प्रधान होता है। इस विधि को अधिगम विधि (learning method) कहते हैं। क्योंकि

अधिगम- विषय गन्ध, स्वाद आदि के माध्यम से नही दिये जा सकते हैं इसलिए इस विधि का उपयोग विस्तार सिमित है (iii) व्यक्ति में बिम्बों की प्रधानता जानने के लिए ध्यान -भंग- विधि (distraction method) का भी प्रयोग किया जाता है। तुलनीय विषयों को सिखने के लिए समय कभी दृष्टि उद्दीपनों से ध्यान भंग करते हैं, कभी श्रवण तथा अन्य संवेदी स्त्रोतों से ध्यान भंग करते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जिस संवेदी माध्यम से ध्यान भंग करने पर अधिगम को सर्वाधिक बाधा हुई, उसी संवेदी रूप के बिम्बों की प्रधानता उस व्यक्ति में था।

Sd/
Sunil Kr. Suman